# हिन्दी भाषा और उसका विकास

## हिन्दी के विकास-क्रम का रूप -

वैदिक संस्कृत (1500 ई०पू० से पहले)
↓
लौकिक संस्कृत
↓
पालि या पाली
↓
प्राकृत
↓
अपभ्रंश
↓
हिन्दी (1000 ई०)

भाषा-शास्त्र के अनुसार हिन्दी के दो रूप हैं —
(1) पश्चिमी हिन्दी (2) पूर्वी हिन्दी

(1) पश्चिमी हिन्दी की बोलियाँ — (1) खड़ी बोली (2) ब्रजभाषा (3) कन्नौजी (4) बुन्देली (5) बाँगरू।

(2) पूर्वी हिन्दी की बोलियाँ — (1) अवधी (2) बघेली (3) छत्तीसगढ़ी।

हिन्दी — हिन्दी शब्द फारसी की देन है। फारसी में संस्कृत के 'स' का 'ह' हो जाता है। अतः सिंधु, सिंध और सिंधी शब्दों के फारसी रूप हिन्दू, हिन्द और हिन्दी माने जाते हैं। हिन्दी शब्द मुसलमानों द्वारा दिया गया है। आचार्य शुक्ल के मतानुसार हिन्दी साहित्य की व्यवस्थित परंपरा ग्यारहवीं शताब्दी से आरंभ हुई।

भारत की स्वतन्त्रता के उपरान्त 14 सितम्बर 1949 को हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में मान्यता मिली। साथ ही देवनागरी लिपि को राष्ट्रीय लिपि घोषित किया गया। 26 जनवरी 1965 को ~~संविधान~~ संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार हिन्दी को संघ की राजभा

Congratulations! Take pride. You are using a Navneet ecobuddy™ product.

Scanned by CamScanner

स्वीकार किया गया। देवनागरी लिपि का विकास ब्राह्मी लिपि से हुआ है। देवनागरी की व्युत्पत्ति 'नागर' शब्द से मानी जाती है।

## हिन्दी प्रचार आन्दोलन –

1- शिक्षा सम्बन्धी पुस्तकें को प्रकाशित करने के लिए आगरा में 'स्कूल बुक सोसायटी' की स्थापना हुई।

2- राजा राममोहन राय तथा कुछ अन्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों द्वारा कोलकाता में हिन्दू कालेज की स्थापना की गयी। हिन्दी साहित्य के विकास में भारत की तात्कालिक राजधानी कोलकाता में स्थापित फोर्ट विलियम कालेज का विशेष योगदान रहा।

3- 1856 ई० में राजा शिवप्रसाद ने काशी से 'बनारस अखबार' निकलवाया जिसकी लिपि देवनागरी थी किंतु भाषा उर्दू से प्रभावित थी। कुछ समय बाद काशी से ही बाबू तारामोहन मित्र तथा उनके मित्रों ने 'सुधाकर' नाम से एक अन्य पत्र का प्रकाशन किया जिसकी भाषा में हिन्दी का रूप मिलता है।

4- नागरी प्रचारिणी सभा, काशी – वाराणसी विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष बाबू श्याम सुन्दर दास हिन्दी के अनन्य प्रेमी थे। साहित्यालोचन, रूपक रहस्य, भाषा विज्ञान, भाषा रहस्य आदि उनके सैद्धांतिक ग्रंथ हैं। बाबू श्यामसुन्दर दास पं० ~~सत्य~~ नारायण मिश्र आदि के सहयोग से 16 जुलाई 1893 को काशी में नागरी प्रचारिणी सभा की नींव डाली गयी।

काशी नागरी प्रचारिणी सभा की ओर से सन् 1945 में एक प्रामाणिक शब्दकोश की रचना हुई। इसका संपादन रामचन्द्र शुक्ल ने किया। इस कोश का नाम 'शब्द सागर' है।

5- सन् 1896 में नागरी प्रचारिणी पत्रिका का प्रकाशन आरंभ हुआ। इसके पहले संपादक श्री बेनी प्रसाद थे।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग – इलाहाबाद में सन् 1910 में हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थापना की गयी।

Scanned by CamScanner

6- 1927 ई० में हिन्दुस्तान एकेडेमी नामक संस्था की स्थापना हुई। जिसने हिन्दी प्रचार-प्रसार का हेतु विशेष कार्य किया।

7- आर्य समाज के द्वारा प्राचीन गुरुकुल शिक्षा पद्धति के आधार पर गुरुकुल कांगड़ी (हरिद्वार) जैसी आदर्श शिक्षा संस्था की स्थापना की गयी। आधुनिक शिक्षा पद्धति का अनुसरण करते हुए आर्य समाज में नगर-२ में एंग्लो दयानन्द वैदिक स्कूल व कालेज स्थापित किए जिन्हें डी० ए० वी० कालेज के नाम से जाना जाता है।

आर्य समाज की भाँति बंगाल में राजा राममोहन राय द्वारा स्थापित ब्रह्म समाज ने भी हिन्दी-प्रचार में योगदान दिया।

**बोली** - किसी सीमित क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषा का स्थानीय रूप 'बोली' कहलाता है। पाँच ~~की~~ मील की दूरी पर ही बोली में थोड़ा सा परिवर्तन हो जाता है यद्यपि उसके सामान्य रूप में कोई बदलाव नहीं आता है। बोली में साहित्य रचना नहीं होती है।

**उपभाषा** - भाषा का वह रूप जो बोली के क्षेत्र की अपेक्षा अधिक विस्तृत होता है 'उपभाषा' कहा जाता है। इसके सामान्य स्वरूप में कोई परिवर्तन नहीं आता। उपभाषा की एक विशेषता यह होती है कि इसमें साहित्य की रचना होती है। क्रमशः विकसित होती हुई यह उपभाषा 'भाषा' के रूप में परिवर्तित हो जाती है।

**मानक भाषा** - भाषा के प्रचार-प्रसार के साथ उसके मौलिक रूप में विभिन्नता व अनेकरूपता उत्पन्न हो जाती है। कहीं-२ शब्दों के अर्थ में भी अंतर आ जाता है और वर्ण-रचना में भी बदलाव आ जाता है। ऐसी स्थिति में शिक्षित एवं विशिष्टजन द्वारा जिस रूप का प्रयोग किया जाता है, उसे भाषा का मानक रूप कहा जाता है।

**संपर्क भाषा** - वह भाषा जिसके माध्यम से एक-दूसरे के ~~का~~ साथ संपर्क स्थापित किया जा सकता है, संपर्क भाषा कहलाती है।

Congratulations! Take pride. You are using a Navneet ecobuddy™ product.

Scanned by CamScanner

राजभाषा - जिस भाषा का प्रयोग शासन-व्यवस्था के संचालन हेतु किया जाता है उसे राजभाषा कहते हैं। सरकारी पत्र-व्यवहार, शासन-सम्बन्धी कार्यों, न्याय-व्यवस्था तथा संसदीय कार्यों में प्रयोग होने के कारण उसका महत्वपूर्ण स्थान है।

राष्ट्रभाषा - जिस भाषा का प्रयोग देश के बहुत बड़े भाग में किया जाता हो तथा जिस भाषा को देश का बहुमत बोलता और समझता हो वह देश की राष्ट्रभाषा कहलाती है।

Scanned by CamScanner